शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –23-27

बलवंत सिंह कि कहानियों में पंजाबी संस्कृति का प्रतिबिम्ब

Faiyaz Alam
C 138 Second Floor
Shaheen Bagh New delhi 110025
Email: faiyaz@rediffmail.com Mob:9818356471

Received– 08 may - 2026
Accepted-10 May - 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
Faiyaz Alam
C 138 Second Floor Shaheen Bagh New delhi 110025 Email: faiyaz@rediffmail.com Mob:9818356471
DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041406
Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।
OPEN ACCESS Shodh Utkarsh CC-BY 4.0

बलवंत सिंह का जन्म जून 1921 गुजरावाला , पंजाब में हुआ 1937 से बलवंत सिंह ने कहानी लिखना शुरू किया , उनकी रचनाएँ, इलाहबाद वह दिल्ली की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। बलवंत सिंह की मुख्य कहानी संग्रह में 'जग्गा' , 'पहला पत्थर' , 'तार व् पौद' ,' हिंदुस्तान हमारा', 'पंजाब हमारा' , 'चिलमन' , और 'देवता का जन्म' का शुमार होता है तो दूसरी तरफ उनके उपंन्यासों में 'रात चोर और चाँद' , ' एक मामूली लड़की', 'औरत और आबशार' , 'काले कोस' , 'रावी पार', और 'चाक्पीरां का जस्सा' मुख्य हैं। बलवंत सिंह उर्दू के उन् प्रमुख साहित्यकारों में से एक हैं जिन्होंने अपनी कहानियो से समाज को एक नयी दिशा देने का काम किया उनकी कहानियों में पंजाब के गावँ की जिवंत तस्वीर देखने को मिलती है , उनके रचनाओं में पंजाब की ग्रामीण शैली , मेहनतकश अवाम , किसान , मजदूर और आम लोगो की समस्याओं और उनकी भावनाओं का सजीव चित्रण बोल चाल की भाषा में देखने को मिलता है. उनकी कहानियों में उर्दू और पंजाबी भाषाओं का सुन्दर संगम देखने को मिलता है उनकी कहानियों और उपन्नियासो का सम्बन्ध पंजाब से है , पंजाब की मेहनतकश आवाम और कदम कदम पर उनके साथ होने वाले ज़ोर ज़बरदस्ती , डाकाजनी शिक्षा की कमी , लूट - खसोट और महिलाओं के शोषण को बहुत खूबसूरती से अपने कहानियो में पेश किया है बलवंत सिंह की सबसे अछि बात यह है कि वह पंजाब में पैदा हुए और बहुत कम दिन वह वहां रहें बावजूद इसके वह उमरभर पंजाब को भूल नहीं पाए , जिस तरह से उन्होंने पंजाब के खेत - खलियान , रहन- सहन , सांस्कृतिक विरासत का वर्णन किया है उससे उनके पंजाब से रूहानी लगाओ का हम् बखूबी अंदाजा लगा सकते हैं। उन्हें उत्तर प्रदेश साहित्य अवार्ड , पटिआला सरकार साहित्य अवार्ड और पंजाब सरकार शिरोमणि साहित्य अवार्ड से नवाज़ा गया

बलवंत सिंह कि कहानियों में पंजाबी संस्कृति का प्रतिबिम्ब-वैदिक काल में सर जमीन ए पंजाब को सप्त संधू (सात नदियों का राज्य 'सतलज,बेयास ,रावी ,चिनाब, झेलम,सरस्वती और संधू) के नाम से पुकारा जाता था I वैदिक काल में इस के उत्तर में सरस्वती और पश्चिम में सिंध नदियां इसकी सीमा थीं I चौदहवीं शताब्दी में इब्ने बतूता ने भी अपनी रचनाओं में पंजाब शब्द पर चर्चा की है I जिसका व्यापक पैमाने पर प्रयोग सोलहवीं सदी की पुस्तक तरीखे ए शेर शाह सूरी में देखने को मिला I -पंजाब शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम खुसरो ने अपनी रचनाओं में किया I इस् के अतिरिक्त अबुल फज़ल ने आईने ए अकबरी में पंजाब को पंजनद का नाम दिया जिसका सम्बन्ध पांच नदियों से है ये पांच नदियां हैं सतलज,बेयास ,रावी ,चिनाब और झेलम जिनमे सतलज और बेयास पंजाब हिंदुस्तान में हैं तो झेलम और चिनाब पाकिस्तान में इसके अतिरिक्त रावी हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों को जोड़ने का काम करती है I समय समय पर पंजाब की धरती पर विदेशी आक्रमण होने के कारण यहाँ का मानचित्र कई बार बना और कई बार बिगड़ा और बदला,एक समय था की पंजाब की सीमायें दिल्ली से काबुल तक थीं जिस की धरती पर पांच नदियां बहती थीं परन्तु देश के विभाजन

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –23-27

के उपरांत पांच नदियों की यह भूमि केवल दो नदियों की भूमि बन कर रह गयी I 1849 में पंजाब पर ब्रटिश हुकूमत काबिज हुई हुकूमत संभालते ही अंग्रेजी सरकार ने पंजाब का आर्थिक शोषण आरम्भ कर दिया और अपनी नीतियों से इस प्रान्त में सम्प्रदायिक वैमनस्य का बीज डालने का काम किया I जिसकी तस्वीर हमें 1947 में विभाजन के रूप में देखने को मिली , इस बिभाजन से सब से ज्यादह नुकसान पंजाब का हुआ जिसके तहत इस प्रान्त का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान में चला गया I विभाजन से पूर्व भी इस प्रान्त ने कई प्रकार की त्रासदियों को झेला मुख्य रूप से पंजाब को सरहदी रियासत होने के वजह से अक्सर बहरी आक्रमणकारियों के ज़ुल्म वो सितम का भी इन्हें सामना करना पड़ा I इन आक्रमणों ने यहाँ के लोगों में साहस ,वीरता,त्याग,बलिदान हिम्मत और मज़बूती प्रदान करने का काम किया I हिंदुस्तान के विभिन रंग जात और भाषा के लोगों के आने और यहाँ के स्थानीय लोगों से उनके मेल मिलाप ने भारत में एक ऐसे कल्चर की बुनियाद रखी जिसे 'वसुधैव कुटुम्बकम' के नाम से जाना जाता है I , यही भारतीय संस्कृति की आत्मा है I यहाँ के स्थानीय लोगों ने बिना किसी भेद भाव के यहाँ आने वाले तमाम बहरी लोगों का न सिर्फ स्वागत किया बल्कि उनकी रहन सहन, सभ्यता और संस्कृति को भी अपनाया I स्थानीय लोगों के इस मेल मिलाप में अनेकता में एकता देखने को मिली I आरम्भ से ही पंजाब की संस्कृति कृषि प्रधान रही है पंजाब का क्षेत्र समतल और मैदानी है यह प्रदेश नदियों द्वारा बहा कर लायी गयी मिटटी से बना है इस लिए यहाँ की मिटटी अधिक उपजाउ है -उपजाउ मिटटी सिंचाई के साधनों की व्यवस्था और अनुकूल जलवायु होने के कारण कृषि यहाँ के निवासियों क प्रमुख व्यवसाय बना शारीरिक क्षमता ,कठोर मेहनत अदम्य सहस के बल पर पंजाब के लोगों ने यहाँ की बंजर जमीन को हरा भरा करने का काम किया I

सूबा पंजाब अपने कल्चर ,सूफी ,सूफियों की रिवायत ,लोगों की बेबाकी,जवांमर्दी,वहां की साहित्यकारों और उनकी रचनाओं आदि से पहचानी जाती है I पंजाब से जुड़े हुए अनेक उपन्यासकारों और कहानी कारों ने यहाँ के जन जीवन को अपने रचनाओं का हिस्सा बनाया है I इनमे श्री गुरु अर्जुन देव,अनवर मसूद, श्रद्धा राम फुल्लौरी,अवतार सिंह संधू(पाश) बलराज साहनी ,चमन लाल,गुरबचन सिंह तालिब,करतार सिंह दुग्गल ,कुलवंत गिल राजेंदर सिंह बेदी,अहमद नदीम कासमी,सआदत हसन मंटो,अमृता प्रीतम,खुशवंत सिंह,फैज़ अहमद फैज़, साहिर लुधियानवी ,कृष्ण चंद्र ,रतन सिंह,सुरेंद्र प्रकाश, यशपाल और कृष्णा सोबती आदि मुख्य हैं जिन्हों ने पंजाब की सामाजिक,सांस्कृतिक,आर्थिक और राजनितिक जीवन की बहुविध झांकियों को अपनी रचनाओं का हिस्सा बनाया है. पंजाब के सूफियों में बाबा बुल्ले शाह,बाबा फरीद,गुरु नानक देव,और वारिस शाह जैसे लोगों ने अपनी रचना और विचारों के द्वारा पुरे देश के लोगों को न सिर्फ प्रभावित किया बल्कि पुरे देश की जागरूक जनता को एक नए सोच से रूबरू करने का काम किया-एक तरफ पंजाब के सूफियों ने अपनी रचनाओं एवं विचारों से पूरी दुनिया को वहदानियत और भाईचारा का पाठ पढ़ाया तो दूसरी तरफ वहां के लिटरी पर्सनालिटीज ने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों ,अंध विश्वास और संकीर्ण रस्म रिवाज के खिलाफ आवाज़ उठाने का काम किया और एक सभ्य समाज का सपना देखा I

उर्दू के अधिकतर महत्वपूर्ण कहानिया पंजाब और पंजाब को पृष्ठभूमि बना कर लिखे गए -उर्दू के मुख्य कहानीकारों में अहमद नदीम कासमी और बलवंत सिंह की कहानियों का केंद्र विन्दु पंजाब की मिटटी से तैयार हुआ है जिसमे वहां की नदी ,किसान की जिंदगी की तस्वीर पर चर्चा की गयी है तो राजेंद्र सिंह बेदी ने पंजाब की ग्रामीण जिंदगी और घर के अंदर की महिलाओं और उनकी जिंदगी और उनपर होने वाले यौन उत्तपीड़न को केंद्र विन्दु बनाया है -मंटो ने विभाजन के उपरांत समाज में आने वाले बदलाव,बेबस औरतों की सच्ची तस्वीर से लोगों को आगाह करने का काम किया है तो बलवंत सिंह ने स्वतंत्रता पूर्व के पंजाब की पूरी तस्वीर को वर्तमान परिदृश्य में पेश कर के पंजाब के ग्रामीण जिंदगी की मुकम्मल तस्वीर से से हमें रूबरू कराया है I बलवंत सिंह अपने देहांत से दो महीने पहले उपेन्दर नाथ अश्क़ को दिए साक्षात्कार में अपनी रचनाशीलता के सम्बन्ध में जो विचार रखे वो ध्यान देने योग्य है -

'बलवंत सिंह तुम्हारी तहरीरो तख़लीक़ का क्या मक़सद है ?

लम्बी सांस भर कर कहने लगे -अश्क़ इस दुनिया में बहुत दुःख हैं अगर मैं अपने अफसानों से उन्हें कुछ कम कर दूँ तो क्या मुज़ायक़ा है ? और मुझे पहली बार लगा कि इस से बड़ी अफ़ादीयत और क्या हो सकती है कि आदमी ऐसी कहानियां लिखे जिन्हें पढ़ते हुवे क़ारईन अपना दुःख दर्द भूल जाएँ और उनके खात्मे पर कभी उनकी आँखों में सुख के आंसू तैर जाएँ -

(बलवंत सिंह सख्सियत और फैन,उपेंद्र नाथ अश्क़,आजकल ,नई दिल्ली - जनवरी 1995 ,पृष्ठ 11)

बलवंत सिंह का में जन्म जून 1921 गुजराँवाला, पंजाब और मृत्यु 27 मई 1986 को इलाहबाद में हुई- अपनी जीवन के लगभग अंतिम चालीस वर्ष वो इलाहबाद में ही गुजारे - इन दिनों मे वों भले ही इलाहाबाद में क़याम पज़ीर रहे बावजूद इसके वह पंजाब को कभी वह भूल नहीं पाए थे-पंजाब से उनकी इसी वालिहाना मुहब्बत और अक़ीदत ने उनके अफसानों की ज़मीन तैयार की जिस की वजाहत इस कथन से हो जाता है—'बलवंत सिंह की बिमारी के दौरान पंजाब में जो हालात थे ,उनसे वह बहुत दुखी और मायूस थे-कभी मायूसी के आलम में कहते के नानक ,वारिस शाह ,स्वामी राम तीरथ और अल्लामा इक़बाल की इस सरज़मीन को किस बदबख्त की नज़र लग गयी है-इस्सके मुहाफिजों को क्या होता जा रहा है -कब तक यह बहिश्त दोज़ख की आग में जलता रहे गा - कब यहाँ एकजहति ,भाईचारा और देश प्रेम की मौजें रवां होंगीं '-

(डा.तिलकराज गोस्वामी,शहर आफ़ाक़ अफसाना निगार :बलवंत सिंह- आजकल,नईदिल्ली-जनवरी1995 ,पृष्ठ 6)

भारत के अनेक लेखकों ने पंजाब और पंजाबी जन जीवन को अपने अपने उपन्यासों और कहानियों में चित्रित किया है इन लेखकों में एक मुख्य नाम बलवंत सिंह का है जिन्हों ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में पंजाबी जन जीवन को चित्रित किया है मुख्य तौर से स्वतंत्रतापूर्व और पश्चात् विभाजन की त्रासदी को बहुत खूबसूरती से चित्रित किया है - बलवंत सिंह ने अफसाना निगरी की शरुआत 1940 में की उनका पहला अफसाना दंड के नाम से प्रताप में प्रकाशित हुआ उनकी कहानियों का पहला संग्रह 1943 में जग्गा के नाम से प्रकाशित हुआ जिस में उन्हों ने सिख जाटों की संस्कृति और उनकी तर्जे मुआशरत को एक अलग रूप में पेश किया है-उनका दसरा कहानी संग्रह तारो पौध के नाम से 1944 में प्रकाशित हुआ जिस में उन्हों ने पंजाब के किसानों की परेशानी और जमींदारों के द्वारा किये जाने वाले उनके शोषण पर विशेष रूप से प्रकाश

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –23-27

डाला है -इसके अतिरिक्त सुनहरा देश,पहला पत्थर,हिदुस्तान हमारा,चिलमन और देवता का जन्म उनके अन्य महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं जो उनकी सामाजिक आर्थिक समझ को मुख्य रूप से दर्शाता है-बलवंत सिंह के कहानियों के सम्बन्ध में मशहूर फिक्शन लेखक उपेंद्र नाथ अश्क लिखते हैं :-

'मुझे बलवंत सिंह की कहानियों में ग्रंथि,पंजाब का अलबेला,समझौता,दीमक,खुद्दार,तीन बातें,जग्गा,पहला पत्थर ,देवता का सनम,काको के प्रेमी,काली तेतरी,सुरमा सिंह,यह लम्हे और गुमराह हैं -यह ऐसी कहानियां हैं जिन्हें बार बार पढ़ने पर भी तबियत सैर नहीं होती '

(बलवंत सिंह सख्सियत और फन,उपेंद्र नाथ अश्क़,आजकल ,नई दिल्ली - जनवरी 1995 ,पृष्ठ 12)

बलवंत सिंह की कहानियों के विषय बिलकुल अछूते हैं -उनकी कहानियों के पात्र ,विषय और भाषा सभी का सम्बन्ध गावं और ग्रामीण परिवेश से तैयार होता है जिसे वह इतनी सुंदरता से कहानी के रूप में ढालते है जिस से पढ़ने वाले के आँखों के सामने उसका पूरा दृश्य और उसका परिवेश घूम जाता है -यही चित्रांकन और विषय की अनोखापन उन्हें दूसरे अफसाना निगारों से अलग स्थान प्रदान करता है -जिसके सम्बन्धे में डॉ. सीमा सग़ीर लिखती हैं।

'बलवंत सिंह हक़ीक़त निगार हैं और हक़ीक़त निगारी का मवाद उन्हों ने जिंदगी के बोझल मसाएल और क़ुर्बो ज्वार के माहौल से हासिल किया है। मौजूआत और किरदार की तख़लीक़ के ऐतबार से वह उर्दू के उन चंद अफसाना निगारों में से हैं जिनका कैनवास इंतहाई वसी है उनके यहाँ पंजाब के देहात ,शहर,किसान,कलर्क सभी मौजूद हैं।ऐसा महसूस होता है की उनके अफसानों में पूरा पंजाब और उसके मसाएल,वहां की रूह दबे पाव इस तरह सिमट आयी है की कारी फ़ौरन बोल उठता है की देखो यह हमारा यथार्थ है हमारा पंजाब है।'

(तरक़्क़ी पसंद उर्दू हिंदी अफसानों का तक़ाब्ली मुताला ,डा सीमा सग़ीर ,पृष्ठ 279)

बलवंत सिंह की रचनाओं का मूलतः सम्बन्ध पंजाबी जन जीवन से है -जिसके तहत उन्हों ने अपने उपन्यासों का सम्बन्ध पंजाबी जन जीवन से तैयार की है मुख्य रूप से स्वतंत्रता पुर्व के पंजाब की सामाजिक स्थिति हिन्दू मुस्लिम सम्बन्ध जैसी तमाम चीजों पर खूबसूरती से रौशनी डाली है उनके मुख्य उपन्यासों में रात चोर और चाँद,काले कोस ,दो अकाल गढ़ और रावी पार आदि मुख्य हैं - बलवंत सिंह के उपन्यासों में पंजाब के सिख जाटों की जीवन प्रणाली की कलात्मक झांकी देखने को मिलती है -सिख जाटों के जीवन से सम्बंधित शायद ही कोई ऐसा पहलु है जिस पर बलवंत सिंह ने रौशनी नहीं डाली हो इस सम्बन्ध में उनकी पत्नी मंजू सिंह लिखती हैं 'जाटों, पहलवानों की ज़िन्दगी की कहानियां लिखने वाले बलवंत सिंह खुद भी कद काठी में अफसानों के किरदारों की तरह ही भले लगे, उनका दिल बड़ा नरम, मस्त-मौला, और प्यार भरा था वह हसमुख थे और बीवी बच्चों को प्यार व् इज़्ज़त देने वाले शख्स थे।'

आज कल - मेरे शौहर बलवंत सिंह -मंजू सिंह पृष्ठ 4 । -

बलवंत सिंह का व्यक्तित्व उनकी उनकी रचनाओ में मुख्य रूप से उभर कर है पंजाबी समाज का पारिवारिक जीवन,खान पान ,वेश भूषा,रहन सहन,रीती रिवाज और मान्यताएं ख़ास तौर से उनके उपन्यासों में देखने को मिल जाती हैं बलवंत सिंह की पंजाब के देहाती जिंदगी की मंज़र कशी के सम्बन्ध में वक़ार अज़ीम के कथन को हुस्सैनुल हक़ इस तरह लिखते हैं- 'बलवंत सिंह से पहले हमारे बाज़ अफसाना निगारों ने पंजाब के देहात की ज़िन्दगी दी थी लेकिन जब से बलवंत सिंह इस मैदान में आये तो उन के अफसानों को पढ़ कर यह महसूस होने लगा के हम ने अब तक पंजाब के देहात को देखा ही नहीं था या अगर देखा था तो बहुत दूर से देखा था -हर ज़िन्दगी का अपना एक मख़सूस ठेठपन जितना ज्योदह होगा उसका उतना ही लोगो की मुआशरती ज़िन्दगी और अख़लाक़ी जिंदगी से भी बढ़ कर उनकी ज़ेहनी और जज़्बाती जिंदगी पर दिखाई देगा -पंजाब ,देहात,और देहात की इस ठेठपन को जिस की बे लॉस जिंदगी में भी हज़ारों तरह की पेचीदगियां हैं -बलवंत सिंह ने बड़े मुखलिसना अदबी और लतीफ़ अंदाज़ में अपने अफसानों के ज़रिये हम तक पहुँचाया है-इस मुसव्वरी में फ़िक्र की गहराई भी है और तख़्युल की रंगीनी भी और उसके बावजूद हद दर्जा की सादगी भी ,जो मौजू की सादगी के साथ पूरी तरह हमआहंग है-यह सारी बातें बलवंत सिंह के उन अफसानों में भी थीं जो उन्हों ने तक़सीम से पहले लिखे और उन अफसानों में भी है जो उन्हों ने तक़सीम के बाद लिखे-

(हुसैनुल हक़ ,बलवंत सिंह बहैसियते क़िस्सा गो ,आजकल-बलवंत सिंह नंबर ,पृष्ठ 50)

बलवंत सिंह पंजाब को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखते हैं-पंजाब जो अपने सूफियों, सांझी संस्कृति,नदी, पर्यावरण और अपनी जिंदादिली के लिए मशहूर था स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पंजाबी समाज में में इतनी तेजी से बदलाव आया की पंजाब की पंजाबियत छिन्न भिन्न हो गयी भाईचारा और आपसी मेल-जोल की जगह नफरत,हिंसा,अनैतिकता और भ्रस्टाचार ने ले लिया - देश की विभाजन का सब से बड़ा भुक्तभोगी ये रियासत बना -पंजाब का दो टुकड़े होना और एक बड़े हिस्से का पाकिस्तान में जाना यहाँ के लोगों के लिए एक बड़ी नाकामी था जिस से उबरने में उन्हें कई दशक लग गए -सरहद न सिर्फ दो मुल्कों बल्कि इंसानियत भाईचारा और सांझी संस्कृति में भी आड़े आ गयी,बलवंत सिंह समाज में आये इस अचानक बदलाव से बहुत आहत थे -वो पुरानि पंजाबी परंपरा जिसमे खुश हाल पंजाबी समाज वहां के सिख जाटों की जीवन प्रणाली ,वहां की संयुक्त पारिवारिक परंपरा और वहां की रोमानी फ़िज़ा शादी व्याह रस्मो रिवाज गीत ढोल बाजे नाच गाने आदि को आज के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं -यही उनकी कलात्मकता की विशेषता है उन्हों ने अपनी रचानावों को छोटे कैन्वस में बड़ी बड़ी बातों को समेटने का काम किया है -बलवंत सिंह कि कहानियों को पंजाब के सांस्कृतिक जीवन का दस्तावेज़ कहा जा सकता है,जिसके तहत पंजाबी समाज वहां के रस्मो रिवाज खेल, मेले,त्यौहार, मकान ,खेत,खलियान,सिंचाई के साधन,रंग विरंगे कपडे ,खानपान कुश्ती कब्बड्डी आदि पर विस्तार से चर्चा की है- इस के इलवाह बलवंत सिंह ने सिखों की समाजी,सांस्कृतिक और धार्मिक तमाम पहलू पर बड़ी सुंदरता से से अपनी बात राखी है - सिखों की धार्मिक जिंदगी के सम्बन्ध में उनके बिचारों पर वारिस अल्वी लिखते है-

'बलवंत सिंह के अफसानों में सिखों की मज़हबी जिंदगी की जैसी तरजुमानी मिलती है वह बेदी के यहाँ भी नज़र नहीं आती-बेदी के यहाँ हिन्दू असातीर का इल्तेज़ाम ज्यादह है और फिर उनका अफसाना महज़ तहज़ीबी फ़िज़ाबंदी से बहुत आगे जाता है-एक ऐसे नुक़्ते पर जहाँ ज़िन्दगी के गहरे रुमूज़ बे नक़ाब होते हैं जैसा की इशारा किया जा चूका है-बलवंत सिंह का अफसाना इस नुक़्ता को

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –23-27

साज़ ही छूता है -यह उनकी हद है लेकिन इन हुदद में वो बे मिसाल हैं,मसलन उनका अफसाना ग्रंथि भले ही किसी गैर मामूली नफसयाती या अख़लाक़ी नुक़्ता को सामने न लाता हो लेकिन उसमें सिखों की देहाती ज़िन्दगी मज़हबी ज़िन्दगी की एक ऐसी ज़रूरी अक्कासी मिलती है कि इस का मुताला किसी तहज़ीबी इकाई की शनाख्त की जमालियाती क़द्र पैदा कर लेता है '
(वारिस अल्वी,बलवंत सिंह की अफसाना निगरी के चंद पहलु,आजकल,नई दिल्ली 1995 ,पृष्ठ 35)
बलवंत सिंह के आर्ट की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है की उन्हों ने अपनी कहानियों और उपन्यासों का पूरा खमीर वहां की देहाती जिंदगी से लिया है देहात के पात्र वहां का वातावरण ,खानपान,वेशभूसा आदि तमाम चीज़ें उनकी कहानियों में सुंदरता लाने का काम करती हैं -उनके कहानियों और उपन्यासों के पन्नों का सम्बन्ध न सिर्फ ग्रामीण परिवेश से है बल्कि ग्रामीण परिवेश की सामूहिक जीवन शैली पर जिस ख़ूबसूरती से रौशनी डाली है वो क़ाबिल इ तारीफ है बलवंत सिंह ने पंजाब के खान पान के तहत लस्सी दूध,घीऔर शक्कर गुंधी हुई गरमागरम रोटी,मखन ,शारदायी ,शराब,मांस,मुर्गा,मछली,और तंदूर की रोटी, मट्ठा और उँटनियों के दूध की भी चर्चा उनके उपन्यासों में की गयी है -अपने उपन्यास कालें कोस में लिखते हैं 'मेले में जा कर ऊंटनियों का दूध न पीना तो अपने आप पर जुल्म करने के बराबर है '
(दो अंकालगढ़, बलवंत सिंह -पृष्ठ 37)
इसी तरह काले कोस में पंजाबी खान पान की चर्चा इन शब्दों में करते हैं I
'सबसे पहले गंदले तालाबों से पकड़ी हुई मछलियो के सरसो के तेल में तले जाने की तीव्र गंध आदमी के दिमाग तक पहुँचती थी और फिर उनके साथ छेवरों के खाने पीने की दुकानों से पिघली हुई चर्बी में सेंके हुवे बरेके टुकड़ों लोहे की लम्बी सलाखों पर तंदूर की गर्मी से भुनी हुई भर भूरी कलेजी और प्याज और हरे धनिया में तले हुवे बकरे के भेजे की मिली हुई गंध वायुमंडल में चक्कर लगा रही थीं '
(काले कोस, बलवंत सिंह ,पृष्ठ 28)
पंजाब की पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखने वाले अधिकतर कहानीकारों ने पंजाब के साथ साथ पुरे देश की समस्याओं को अपने कहानियों में समेटने का काम किया - मंटो का अफसाना ' टो ब टेक सिंह ' हो या राजेंद्र सिंह बेदी का लाजवंती ,ग्रहण ,हयातुल्लाह अंसारी का 'शुक्र गुज़ार आँखें 'कृष्ण चंद्र का अफसाना 'अमृतसर आज़ादी से पहले 'जैसी तमाम कहानियो में पंजाबी संस्कृति और वहां की वातावरण के साथ साथ दूसरे राज्यों या मुल्क के दूसरे हिस्सों के कल्चर भी देखने को मिल जाते हैं -लेकिन बलवंत सिंह उर्दू के पहले ऐसे अफसाना निगार हैं जिनके यहाँ शुद्ध ग्रामीण संस्कृति का प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है -बलवंत सिंह की कहानियों में 6 फिट ऊंचे चौड़े चकले सीने वाले अक्खड़ पंजाबी नौजवान बड़े ही कमल के साथ उर्दू जैसी नरमो नाज़ुक अफसानों में पात्र, बन जाते हैं -बलवंत सिंह की कहानियों के अधिकतर पात्र मर्दानगी,बहादुरी,दिलेरी,डाकाजनी,,मासूमियत अल्हड़पन,उजाड़ गंवार नेकदिल और वफादार हैं -इसके अतिरिक्त बलवंत सिंह के कहानियों में रहट,खेत खलियान,कच्चे पक्के घर,पेड़ पौधे,मवेशी,उपले,नहरें,और पंजाबियों की मेहमान नवाज़ी जैसी तमाम चीज़ों को एक अलग अंदाज़ में अपने कहानियों में जगह दी है -बलवंत सिंह के कहानियों के पात्र के कई रूप हैं-प्रेमचंद के बाद बलवंत सिंह उर्दू के एक मात्र कथाकार हैं जिनके यहाँ पंजाब का गाँव अपने अलग अलग विषेशताओं के साथ देखने को मिलता है -
उनकी कहानियों में जागीरदारना व्यवस्था,किसानों की समस्याएं ,फसलों की तबाही और इस तबाही का किसानो की ज़िन्दगी पर पड़ने वाले प्रभाव,जमींदारों का ज़ुल्मो सितम ,किसानों की बदहाल ज़िन्दगी और सांस्कृतिक टकराव जैसी तमाम चीज़ों पर बलवंत सिंह ने बहुत ही बेबाक अंदाज़ में रौशनी डाली है -जग्गा ,'तारो पौंध ,'सुनहरा देश ',पहला पत्थर,हिंदुस्तान हमारा,चिलमन और देवता का जन्म,वगैरह अहम् कहानियां हैं जिसमे पंजाब एक अलग अंदाज़ में उभर कर सामने आया है -उनकी कहानियों के सम्बन्ध में उर्दू के प्रख्यात विद्वान शम्सुर रहमान फारूक़ी लिखते हैं
'बलवंत सिंह ने पंजाब के देहातों खास कर दूर दराज़ इलाकों के देहातों में रहने वाले सख्त मिजाज जफ़ाकश,जंगज,और अपनी आन बान शान पर मर मिटने वाले जाट सिखों की जिंदगी उनकी महसुसात व तजरबात उनके तसऊर ए कायनात ,लाइहै हयात वगैरह का बहुत गहरा मुशाहिदा किया है ,और अपने मुशाहिदे के द्वारा हासिल होने वाली बसीरत को बड़ी खूबी से उन्हों ने अपने अफसानों में मुन्तक़िल किया है-'
(शम्सुर रहमान फारूक़ी, बलवंत सिंह के कुछ अफ़साने ,आज कल -जनवरी 1955 ,पृष्ठ 26)
बुनियादी तौर से बलवंत सिंह की कहानिया प्रेम चंद की परंपरा को आगे बढ़ने का काम करती हैं ,दोनों लेखकों की रचनाओं में मात्र इतना अंतर है की प्रेम चंद के अफ़साने के विषय अनगिनत हैं जो किसी एक ख़ास दायरे के पाबंद नहीं हैं इसके विपरीत बलवंत सिंह के अधिकतर अफ़साने व उपन्यास का दायरेकार पंजाब और विशेष रूप से सिख समाज है जिसके तहत उनकी हालात ए ज़िन्दगी के तमाम बिंदुओं को सामने लाने की कोशिश की है -
जग्गा ,बनता सिंह,और बूटा सिंह बलवंत सिंह के मुख्या पात्रों में से हैं जिसके द्वारा बलवंत सिंह ने अपनी बात रखने की कोशिश की है-पंजाबी संस्कृति में जर ,जींस और ताकत का विशेष स्थान है ,बलवंत सिंह की अधिकतर कहानियों के ताने बाने इसी से तैयार हुए हैं -बाबा महंगा सिंह,रास्ता चलती औरत और जग्गा जैसी कहानिया इसकी बेहतरीन मिसाल हैं उनकी कहानियों के आर्ट के सम्बन्ध में उर्दू के प्रख्यात फिक्शन राइटर मुशर्रफ आलम ज़ौकी लिखते हैं -
'जहाँ वह खड़े थे वहीँ से उठे ,जिस जमीन से उठे वहीँ से कहानियों की क्यारियां बनायीं -वहीँ की मिटटी उठाई -उसी पौधे उसी खुशबु को संभाला-जहाँ खड़े थे और नज़रें जहाँ देख रहीं थीं वहीँ से कहानियों की तलाश शरू की -और तलाश भी कैसी --कहानियां तो बिखरी पड़ी थीं -हिजरत का दर्द और तक़सीम हुई आँखों का नौहा बस अभी नया नया था-----अभी तो ज़ख्म ताज़ा था -वही ज़मीन-वही मिटटी-वही खुशबु-जग्गा से काले कोस तक के फैसले को बलवंत सिंह के अफ़कार वो ख्यालात में नुमायां तब्दीली आयीं वसी मुतालआ और उनके तजरबात वो मुशाहिदात ने उनकी तख़्लीक़ी सफर में नई नई राहें खोलीं और वो आगे बढ़ते चले गए--पंजाब पंजाब के रहन सहन,रस्मो रिवाज को मौज़ू तहरीर बनाने वालों की कमी नहीं रही-मगर मेरा ख्याल है की बलवंत सिंह का पंजाब और था और वो अनोखा पंजाब जो उन की तख़लीक़ात में नज़र आता है सिर्फ और सिर्फ उन्हीं की दरयाफ्त है--पंजाब की

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –23-27

बिंदास तबियत,शोख,सरमस्ति और निसार जाने वाले रवैयों पर यूँ तो हज़ारों क़िस्से लिखे गए,मगर जिस तौर पर बलवंत ने लिखा वो अनोखा था,

(बलवंत सिंह का पंजाब ,मुशर्रफ आलम ज़ौक़ी, आजकल,नई दिल्ली 1995 ,पृष्ठ 78)

उपरोक्त कथन से यह महसूस होता है की हमने अब तक पंजाब के देहातों को या तो देखा ही नहीं था या देखा था तो बहुत दर से देखा था बलवंत सिंह ने पंजाब के ग्रामीण परिवेश से हमें पूर्ण रूप से रूबरू करने का काम किया है ' बलवंत सिंह पंजाबी तहजीबों तमद्दुन के नुमाइंदा अफसानानिगार हैं उन्हों ने पंजाब की आन बान शान को बड़ी खूबसूरती से अपने अफसानों में सामने लाने कि कोशिश की है सिख जाट किसानों की जिंदगी और उसके उतार चढ़ाव को अपनी कहानियों में प्रमुखता दी है - इस सम्बन्ध में वारिस अल्वी लिखते हैं

'बलवंत सिंह की कहानी फ़ौरन कारी को अपनी गिरफ्त में ले लेती है और आग़ाज़ से अंजाम तक अपनी दिलचस्पी क़ायम रखती है- मंटो की ही तरह उन्हें तजस्सुस शऊरी काविश का नतीजा नहीं बल्कि बात का जुज़ होता है जो दूसरे अनोखे किरदारों के क़रीब आता है- फ़ितरी तौर पर यह जानने की ख्वाहिश होती है की ये अनोखा किरदार कौन है ,क्या कर रहा है,क्या करता रहा है और क्या करे गा -

(वारिस अल्वी,बलवंत सिंह की अफसाना निगरी के चंद पहलु,आजकल,नई दिल्ली 1995 ,पृष्ठ 33)

सार रूप में हम यह कह सकते हैं कि अगर बलवंत सिंह उर्दू को नहीं मिले होते तो ग्रंथि और गरुद्वारों की ज़मीनी और रूहानी फ़िज़ा ,पंजाब की मिटटी ,मासूम अल्हड जवानी,खूबसूरत लड़की और पुरकशिश मरदाना पात्र और उनकी सुंदरता और रोमानी वातावरण से उर्दू ज़बान बड़ी हद तक महरूम रह जाती और पंजाब के उस सकाफ़ती डिस्कोर्से से अवगत नहीं हो पाती जो इसके कुल सरमाये का बड़ा हिस्सा है I

सारांश -

बलवंत सिंह की कहानियां उनकी निजी तजुर्बाद की पैदगर हैं। बलवंत सिंह का पंजाब से रिश्ता विभाजन से पहले ही ख़त्म हो चूका था , बावजूद उसके इस कम समय में कुछ भी देखा, सीखा और जिया उसे वे जीवन भर भी पाए , मातृभूमि से लगाव का इससे अच्छा उद्धरण नहीं मिल सकता। वह पंजाब की संस्कृति , भाषा , बोल'चाल, रहन- सहन और वहां के अल्हड़पन वह अखड़पन की तस्वीर को बहुत अच्छी तरह से चित्रित किया है, उनकी कहानियों के पात्र अपने बाजू और मेहनत पर यकीन रखते हैं।उन्होंने अपनी कहानियों में जिन नौजवान सिख जाटों का ज़िक्र किया है वोह अपने कद काठी , बोल-चाल , खान - पान और हिम्मत वह जवांमर्दी से सबको प्रभवित करते हैं। एक तरफ लड़कियां जो अपनी सुंदरता और नज़ाकत से पहचानी जाती हैं वह इन नौजवानों को देख कर पहले जहाँ खौफ खाती हैं वहीँ दूसरी तरफ इनकी बहादुरी से प्रभावित भी होती हैं। बलवंत सिंह ने हक़ीक़तनिगरी और पंजाबी संस्कृति के मेल जोल से कहानी में चार चाँद लगा दिए हैं। बलवंत सिंह बिना किसी उलझाव के बहुत ही आसान अंदाज़ में बात करते नज़र आते हैं और यही उनकी कहानियों की विशेषता है।

बलवंत सिंह की कहानियों में सिख्खों की देहाती ज़िन्दगी के साथ उनकी मज़हबी ज़िन्दगी पर भी विस्तार से लिखा है। कुल मिला कर हम यह कह सकते हैं कि बलवंत सिंह ने पंजाब के शहरी ज़िन्दगी और देहात की ज़िन्दगी पर बहुत कुछ लिखा है लेकिन यहाँ ये कहने में कोई हर्ज नहीं के उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा पंजाब के देहात को पुनर्जीवित कर दिया है।

****

संदर्भ सूची -

1. बलवंत सिंह सख्सियत और फैन,उपेंद्र नाथ अश्क़,आजकल ,नई दिल्ली - जनवरी 1995
2. डा तिलकराज गोस्वामी,शहरए आफ़ाक़ अफसाना निगार :बलवंत सिंह-आजकल,नईदिल्ली-जनवरी1995
3. तरक़्क़ी पसंद उर्दू हिंदी अफसानों का तक़ाब्ली मुताला ,डा सीमा सग़ीर
4. आज कल - मेरे शौहर बलवंत सिंह -मंजू सिंह
5. हुसैनुल हक़ ,बलवंत सिंह बहैसियते क़िस्सा गो ,आजकल-बलवंत सिंह नंबर
6. दो अकालगढ़, बलवंत सिंह
7. काले कोस, बलवंत सिंह
8. शम्सुर रहमान फारूक़ी, बलवंत सिंह के कुछ अफ़साने ,आज कल -जनवरी 1955
9. बलवंत सिंह का पंजाब ,मुशर्रफ आलम ज़ौक़ी, आजकल,नई दिल्ली 1995
10. वारिस अल्वी,बलवंत सिंह की अफसाना निगरी के चंद पहलु,आजकल,नई दिल्ली 1995

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –23-27